om-21-2014- shiv avtaran-final_Layout 4 1/20/2014 7:44 PM Page 3

परमात्मा की सत्य पहचान के पांच आधार

अब यह तो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है कि परमात्मा एक है और वह सत्य है। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा का परिचय भी केवल एक ही हो सकता है। ईश्वर की सत्य पहचान क्या होगी? जिस प्रकार किसी डॉक्टर की पहचान उसके ज्ञान, अनुभव, गुणों तथा कर्तव्यों के आधार पर ही की जा सकती है, उसी प्रकार परमात्मा की भी सत्य पहचान निम्न पांच बातों के आधार पर की जा सकती है–

– जो सर्वमान्य हो: परमात्मा उसे कहा जाएगा जो सर्वमान्य हो, यानि जिसे सभी धर्मों की आत्माएं सहज ही स्वीकार करें, क्योंकि वह सर्व धर्मों की आत्माओं का परमपिता है। उसे अलग-अलग भाषाओं और धर्मों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है जैसे कि परमेश्वर, ईश्वर, ओंकार, अल्लाह, खुदा, गॉड, नूर इत्यादि परंतु वह है तो एक ही।

– जो सर्वोच्च हो: परमात्मा उसे कहा जाएगा जो सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम या परम हो यानी उसके ऊपर कोई हस्ती न हो। परमात्मा का कोई माता-पिता, शिक्षक, गुरु या रक्षक नहीं है, बल्कि वे ही सर्व आत्माओं के परमपिता, परम शिक्षक, परम सतगुरु और परम रक्षक हैं। इसलिए उसकी महिमा में गाया जाता है- ऊंचा तेरा नाम, ऊंचा तेरा धाम, ऊंचा तेरा हर काम, ऊंचे से ऊंचा भगवान। तो जिसका नाम, गुण, धाम, और कर्तव्य सबसे ऊंचा है वही परमात्मा है।

– जो सबसे न्यारा हो: परमात्मा उसे कहेंगे जो सबसे न्यारा हो। परमात्मा जन्म-मरण, कर्म-फल, पाप पुण्य, सुख-दुःख के चक्करों में नहीं आते हैं। परमात्मा इस प्रकृति की परिवर्तन-क्रिया अर्थात् सतो-रजो-तमो से भी न्यारा है। वह सर्व प्राकृतिक बंधनों से मुक्त है। इसलिए वह सर्व से न्यारा और सर्व का प्यारा माना गया है। ईश्वर से ऊंचा तो कोई नहीं है परंतु उनके समान भी कोई नहीं है।

– जो सर्वज्ञ हो: परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वज्ञ हो अर्थात् वह सबकुछ जानता हो। किसी भी संदर्भ में जब कोई बात व्यक्ति की समझ में नहीं आती है तो ईश्वर को याद कर अवश्य कहेगा, भगवान जाने या अल्लाह जाने अर्थात् परमात्मा से कोई भी बात अनभिज्ञ नहीं है क्योंकि वह सर्वज्ञ है।

- ब्र. कु. गंगाधर

– जो सर्व गुणों और शक्तियों का भंडार हो: परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व गुणों और शक्तियों का भंडार हो। परमात्मा कभी भी किसी से लेता नहीं है, परंतु सागर या सूर्य के समान अपने गुणों और शक्तियों को देता ही रहता है। उसी के लिए गाया गया है, देने वाला जब भी देता है तो छप्पड़ फाड़ के देता है।

हम किसी भी साकार देहधारी व्यक्ति को परमात्मा नहीं कह सकते, क्योंकि साकार व्यक्ति कभी भी सर्वमान्य नहीं हो सकता जो सभी धर्मों की आत्माओं को स्वीकृत हो। साकार देहधारी के माता-पिता, शिक्षक, गुरु, रक्षक अवश्य ही होते हैं इसलिए उसे सर्वोच्च भी नहीं कह सकते हैं। साकार व्यक्ति सबसे न्यारा भी नहीं हो सकता है क्योंकि साकार के साथ जन्म-मरण, कर्म-फल, पाप-पुण्य और सुख-दुःख आदि भी संलग्न हैं। साकार सर्व का ज्ञाता तथा दाता भी नहीं बन सकता है। वह तो और ही ईश्वर से ज्ञान, सुख, शांति और शक्ति मांगता ही रहता है। इन सभी बातों से सिद्ध होता है कि कोई भी साकारी देहधारी व्यक्ति परमात्मा नहीं हो सकता।

सृजनात्मकता में बाधक बनती हैं पूर्व धारणाएं

प्रश्नः- देखा, अब उसने ऐसे किया तो अब ऐसे ही होना चाहिए।

उत्तर :- जैसे कि यह क्रिकेट मैच हो। दूसरे ही क्षण हम जजमेंटल हो जाते हैं और लोगों से विचार चाहते हैं कि हम ऐसे करते तो ऐसा नहीं होता। इवेन दि एक्टर इज़ क्लोज़, सी नो वाटऐवर... ऐक्रोयिंग। और मैं जजमेंटल होना शुरू कर देती हूँ। जैसे जजमेंट शुरू हुआ मतलब क्यों, क्या, कैसे की क्वेश्चन मार्क की सीरीज़ में गये। ये जो मन की स्थिरता थी, वो क्या हो गयी? वो खत्म हो गयी। हमारा मन फिर से डिस्टर्ब होना शुरू हो जाता है और मन की स्थिरता समाप्त हो जाती है। यह हमारी दूसरी स्टेज है। तीसरी अवस्था जो आती है कि हम उस कैरेक्टर की स्टोरी के अंदर ही पूरी तरह से इन्वॉल्व हो जाते हैं। और यह अवस्था ऐसी होती है कि वो कैरेक्टर जो इमोशन वहां अनुभव कर रहा है, वो इमोशन हम यहां अनुभव करना शुरू कर देते हैं। फिर हम पूरी तरह से उस कहानी में सम्मिलित हो जाते हैं। फिर हमारे मन में कोई दूसरी थॉट होती ही नहीं है, क्योंकि हमारी क्रियाशीलता जो है वो खत्म हो जाती है। फिर मैं वही सोचती हूँ जो कि उस स्टोरी में क्रियेट हो रहा है। मेरी अपनी अब कोई क्रियाशीलता नहीं रह गयी।

ब्र. कु. शिवानी

प्रश्नः- उससे पहले तो मैं कर रही थी। जब मैं जजमेंटल हो रही थी।

उत्तर :- जैसे ही जजमेंटल हुए तब क्या हुआ, क्रियेटिविटी नहीं थी। जैसे ही आप जजमेंटल होते हैं आपकी एनर्जी तो उल्टा खत्म होने लगती है। क्योंकि आप किसी और को कंट्रोल करने की कोशिश कर रहे हैं, जिसको आप कंट्रोल नहीं कर सकते हैं। आई कैन सिट एक्रॉस द टेलीविज़न एण्ड कीप ऑन सेयिंग वाट आई वाण्ट टू से। मैं कितना भी जजमेंटल हो सकती हूँ। कैन ड्यू ऐनीथिंग एबाउट इट। मैं आपका प्रोग्राम देख रही हूँ सामने से बैठकर और मैं कहूं कि ये नहीं पहनना चाहिए था ये पहनना चाहिए था, ये सेट ऐसा नहीं ऐसा होना चाहिए था। आप इस संबंध में कुछ कर सकते हैं। नहीं। हम उस चीज़ के बारे में सोचना शुरू कर देते हैं जो मेरे नियंत्रण में ही नहीं है।

प्रश्नः- लेकिन हमारा अपना ओपीनियन सही तो होता है।

उत्तर :- दैट्स ओ.के., दैट्स फाइन, आप सही हैं। आप बस बैठें हैं और यहां आपका माइंड लगातार वो थॉट्स क्रियेट कर रहा है, उन चीजों के बारे में जो आपके कंट्रोल में नहीं है। क्या इसे हम उपयोगी एनर्जी कहेंगे...? नहीं।

प्रश्नः- नहीं, ये तो हो ही नहीं सकता है।

उत्तर:- इट्स ए ड्रेन। आपका ड्रेन शुरू हो गया। जो स्टिलनेस थी वो आपका ड्रेन शुरू हो गया। क्योंकि आप एक-एक वो थॉट क्रियेट कर रहे हैं जो आपके कंट्रोल में नहीं है।

प्रश्नः- वास्तव में इससे और मुझे आदत भी पड़ती जायेगी।

उत्तर :- यही चीज़ तो फिर व्यवहारिक जीवन में आयेगी ना। ये बिल्कुल वही चीज़ फिर रोज के ड्रामा में होती है। जो टेलीविज़न के ड्रामा के साथ पहले प्रैक्टिस होती है, वही चीज़ फिर आदत बन जाती है, फिर वही चीज़ हमारे प्रतिदिन के जीवन में आती है। इसकी तीन अवस्था होती है। पहले स्टिलनेस, फिर जजमेंटल और तीसरा तो पूरी तरह से इन्वॉल्व। और जब पूरी तरह से इन्वॉल्व हो गयी तब तो अपनी थॉट क्रियेट करने की जो मेरी अपनी क्षमता है वह भी मैं भूल गयी। मेरी थॉट की पावर मैंने टोटली उस प्रोग्राम को दे दी। अब यह इसलिए कि मैं वह हर रोज करती हूँ। ऐसा नहीं कि मैं मूवी को एक बार ही देखती हूँ। मैं टी.वी. देख रही हूँ कभी-कभी नहीं। हम रोज कर रहे हैं। तो कोई भी चीज़ जो रोज करेंगे तो वो मेरी आदत बन जाती है। अब जो हमने पिछली बार भी देखा कि गुस्सा अगर सिर्फ ऑफिस में ही कर रहे हैं ये सोचकर कि गुस्से से काम होता लेकिन अगर वो मेरी हैबिट बन जाती है तो वो हैबिट मेरे साथ हर जगह जायेगी। अब ये था जब शुरू किया था बैठकर देखना मैं एक डिटैच ऑब्ज़र्वर या साक्षीदृष्टा थी लेकिन आधे पौने घंटे के अंदर-अंदर मैं उस ड्रामा के अंदर पूरी तरह से घुस गयी। अब यही चीज़ फिर सारा दिन होती है, क्योंकि अब मुझे आदत पड़ गयी है। अब धीरे-धीरे तो वो साक्षीदृष्टा कैसे होना है वही आज हमें यहां नहीं चलता है और इसलिए आज हमारी भाषा ये हो गयी है कि किसी से लगाव होना तो स्वाभाविक है। डिटैचमेंट का कॉन्सेप्ट कम्फर्टेबल नहीं लगता। लोगों को बहुत खराब लगता है कि हम बहुत स्टिल हैं, हम बहुत डिटैच हैं, हमारे ऊपर असर क्यों नहीं पड़ रहा। लेकिन ये जो प्रभाव पड़ने की आदत है वो मन से पड़ती है। V

सोल कॉन्शेस की अनुभूति से अवगुण, कमज़ोरी और विकारों को खत्म करो

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

पहले ओम् शान्ति में शान्ति, दूसरी ओम् शान्ति में शक्ति, तीसरी ओम् शान्ति में मुस्कुराहट क्योंकि मुस्कुराने की शक्ति चाहिए, हर बात अन्दर ही अन्दर प्रैक्टिस करो। जब बाबा की शक्ति मिलती है तो हर वक्त मुस्कुराते हैं। ठीक है, बाबा बैठा है। मुझे जो बाबा सिखाता है वही करना है। शान्ति है तो शक्ति है, शक्ति है तो चेहरा मुस्कुराता है। मुस्कुराने में नैचुरली बाबा की याद भी है और ज्ञानी तू आत्मा का मुख्य लक्षण है हर्षितमुख। ज्ञान कहता है माना समझ कहती है, बाप को याद करो या याद में रहो।

मधुबन हमारे माँ-बाप का घर सो हमारा घर है। यह गॉड फादर की यूनिवर्सिटी भी है, जहां स्वयं परमात्मा पढ़ाता है, मैं पढ़ रही हूं, स्टूडेन्ट हूं। यह हॉस्पिटल भी है एवरहेल्दी, एवरवेल्दी, एवरहैप्पी रहने की। तो यह घर भी है, यूनिवर्सिटी भी है, हॉस्पिटल भी है। फिर यह बड़े से बड़ा तीर्थ स्थान है, जहां खाना, पहनना, बोलना बड़ा शुद्ध है।

ज्ञान भी कहता है बस- मैं आत्मा, परमात्मा का बच्चा। बहुत लम्बा चौड़ा ज्ञान नहीं है, इज़ी है परन्तु रियलाइज़ेशन चाहिए। रीयल आइज़ चाहिए अपने आपको देखने के लिए। सोल कॉन्शेस में बुद्धि कैसे काम करती है और बॉडी-कॉन्शेस में कैसे...वास्ट डिफरेंस। इसलिए अन्दर गुप्त पुरुषार्थ करके सोल-कॉन्शेस रहना है। ऐसे ही याद से शक्ति लेते रहने का लिंक जुटा रहे। जैसे मैं बोलूं यह सुनें (ट्रांसलेटर)...सहज है पर वह एक्यूरेट तभी होगा जब बुद्धि मेरी भी अच्छी होगी, तो सुनने वाले की भी अच्छी, ट्रांसलेशन भी अच्छी और आप कैच भी अच्छा करेंगे। तो ज्ञानमार्ग में बाबा बुद्धि अच्छी देता है, जितना आप इस ज्ञान को धारण करेंगे, जीवन में विचार सागर मंथन करेंगे, फिर बोलेंगे, तो सब कहेंगे यह ज्ञान बड़ा अच्छा है, यह बहुत अच्छा सुनाती हैं। यहां रियलाइज़ेशन से, प्राप्ति से शब्द निकलते हैं। जैसे डॉक्टर ऑपरेशन करता है तो इंजेक्शन पहले लगाता है। तो बाबा ऐसा अच्छा प्यार भरा इंजेक्शन लगाके, अशरीरी बनाके शिक्षायें देता है ताकि जो हमारे में कमी-कमज़ोरी है वो चली जाए। जो अवगुण है वो चला जाए।

एक है विकार, दूसरा है अवगुण, तीसरी है कमज़ोरी। कहेंगे विकार नहीं है अभी, समझा है कि काम-क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार यह तो रावण राज्य में होता है। इसके सिवाय और भी पाँच विकार हैं जो गुप्त उनको साथ देने वाले हैं वह है ईर्ष्या, सूक्ष्म संस्कारों में भी ईर्ष्या...होगी, आवेश भी होगा। मीठापन नहीं होगा। ईर्ष्या, आवेश, आलस्य, अलबेलाई, बहाना...फिर एक्सक्यूज़ करते समय गंवाना। तो सोल-कॉन्शेस के रियलाइज़ेशन से उपरोक्त दसों ही बातें खत्म हो जाती हैं क्योंकि ज्ञान से योग लगा, कनेक्शन ऑलमाइटी से हुआ। माईट आई, तो मोटे हैं, छोटे हैं, सूक्ष्म हैं, अवगुण हैं या कमी है, सब खत्म। क्यों, कैसे खत्म हुए? मुझे सर्वगुण सम्पन्न बनना है यानि सब गुण हों। कोई भी अवगुण न हों। पहले चाहिए सुख, शान्ति, प्रेम। अगर सुख होगा तो शान्ति होगी, प्रेम होगा तो मेरे को किसी का अवगुण दिखाई नहीं पड़ेगा। सबके गुण बहुत अच्छे हैं।

एक दो को देख आत्मिक दृष्टि-वृत्ति हो क्योंकि सभी आत्मायें हैं, परमात्मा के बच्चे हैं, हम एक परमात्मा बाप के घर के रहने वाले हैं। यहां आये हैं पार्ट बजाने के लिए, अभी वापस घर जाना है। अभी जो पार्ट है ना वह कलियुग को खत्म करने का और सतयुग को लाने का पार्ट है, यानि सच्चाई को लेने का है, झूठ को खत्म करना है। झूठ और हिंसा को खत्म करने के लिए व्यक्तिगत हर एक को सच्चाई और अहिंसा से काम लेना है। न दुःख देना, न दुःख लेना, सच्चाई और प्रेम से चलना, यह है लाइफ। लाइफ ऐसी हो जो औरों को भी लाईट दे। कईयों को महसूस होता है, यहां आने से लाइफ चेंज हो गई। लाइफ में जो अंधकार था, दुनिया में रहते क्या करना है, यह समझ में नहीं आता था, पर अभी लाइफ में लाईट मिली, समझ में आ रहा है। बिना लाईट के लाइफ क्या? जब मेरे को लाईट मिली, तो मेरा फर्ज कहता है कि औरों को भी लाईट मिले। यही हमारी भावना है।

मन्सा सेवा से वायुमण्डल चेंज कर समय को समीप लाना है

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

प्रश्नः वर्तमान समय प्रमाण हम सबका पुरुषार्थ क्या हो ना चाहिए? आप हम सबसे क्या चाहती हैं? हम किस बात का ध्यान रखें?

उत्तर: समय अनुसार बापदादा हम बच्चों से यही चाहता है कि मेरा एक एक बच्चा एवररेडी रहे क्योंकि विनाश को सामने नज़दीक लाने के हम ही निमित्त हैं। हम पहले अपने को सम्पूर्ण बनायें। अभी हर एक का यही लक्ष्य होना चाहिए कि बाबा ने जो मुरली में कहा वह होना करना ही है। फिर रात को अपना चार्ट देखना चाहिए कि आज हमने बाबा के कहे अनुसार किया या नहीं किया? बाकी क्या पुरुषार्थ करुं, कैसे करुं...यह क्वेश्चन नहीं है। बाबा जो कहता है वही करना है, तो हम भी खुश, बाबा भी खुश, परिवार वाले भी खुश। तो हमें एकज़ैम्पल बनना है - बाबा ने कहा और हमने किया।

प्रश्नः किन बातों में हमें एवररेडी रहना है?

उत्तर: एक तो अपनी अवस्था सम्पूर्ण बनानी है। कभी कुछ भी हो जाए, कैसा भी समय अचानक आ जाये, हम यह न कहें हम तो तैयार नहीं है, इसके लिए हमें अपनी अवस्था बाप समान बनानी है। जो अभी तक अन्दर चलता है कि यह होना चाहिए, यह नहीं होना चाहिए...वह सब खत्म करके हम बाप समान बन जाएं, यही लक्ष्य रखना चाहिए।

प्रश्नः दिन-प्रतिदिन वायुमण्डल बिगड़ता जा रहा है, उसे कैसे चेंज कर सकते हैं?

उत्तर: वायुमण्डल को बदलने के पहले हम अपने को बदलें ताकि वायुमण्डल का असर मुझ पर न हो। फिर संगठन में सेवा करनी है। डबल पावरफुल बनकर सबको परिवर्तन होने में सहयोगी बनना है। लेकिन इसमें पहले मैं। पहले मुझे बाप समान बनना है फिर सबको बनाना है।

हम कैसे भी वायुमण्डल को अपनी चलन से, योग से और मन्सा सेवा से बदल सकते हैं। मन्सा में जितनी शुभ भावना होगी उतना हमको सेफ रखेगी, कैसे भी वायुमण्डल का असर हमारे ऊपर नहीं आयेगा। फिर जितना जिसको ठीक कर सकते हैं उतना करें। आजकल वाचा से कोई सुधरते नहीं हैं, इसके लिए मन्सा बहुत शक्तिशाली शुभ भावना से सम्पन्न चाहिए। ऐसे नहीं सोचो यह तो सुनने वाला ही नहीं है, यह तो बदलने वाला ही नहीं है। अपनी मन्सा से शक्तिशाली वायुमण्डल बनाओ।

यह भी नहीं सोचो कि ऐसे वातावरण को बदलना मेरे हाथ में नहीं है, जितना कर सकते हो उतना करो ज़रूर। जो भी आपके कनेक्शन में हैं, जिसको कुछ कर सकते हो उसे करो। पहले ऐसे उमंग-उत्साह वालों का ग्रुप बनाओ। भले दो तीन हों लेकिन सभी उमंग-उत्साह वाले हों। ग्रुप में एक भी कमज़ोर होगा तो वह संगठन को कमज़ोर बनायेगा इसलिए भले छोटा संगठन हो लेकिन सभी शुभचिंतक हों। ताकि वह खुद व्यर्थ के वातावरण से सेफ रहें। ऐसे नहीं सोचो यह तो असम्भव है। सम्भव करके दिखाओ।

प्रश्नः जो भी हमारे ईश्वरीय नियम/कायदे हैं, अभी कईयों को उनका पता ही नहीं है, जो आता है करते रहते हैं? क्या उन्हें ठीक किया जा सकता है?

उत्तर: ऐसे लोगों को ठीक करने के लिए इशारा देना चाहिए। दादियों से समय लेकर उन्हें मिलाना चाहिए क्योंकि अभी वृद्धि होती जाती है, बातें भी बहुत बढ़ेगी। यह सब तो होना है। लेकिन आप जो निमित्त हो, उन्हें बड़ों से मिलाकर इशारा दिलाना चाहिए। बड़ों के आप साथी बनो। ऐसे नहीं सोचो बड़े करते तो कुछ नहीं हैं। आप उन्हें सुना दो, फिर सहयोगी बनकर रहो। इसमें बाबा भी क्या करेगा? बाबा मुरली चलाता है, इशारा देता है...कैच करने वाला करे।

प्रश्नः दादी आप जैसी न्यारी प्यारी अवस्था हम कैसे बनायें?

उत्तर: कोई भी बात होती है, आप भी साक्षी स्थिति में रहने का अभ्यास करो। बाबा को साथी बनाकर रखो। कुछ भी देखते सुनते न्यारे प्यारे हो जाओ। जितने भी निमित्त हैं, सूक्ष्म वायब्रेशन से वायुमण्डल को शक्तिशाली बनायें। अभी कहने का समय रहा ही नहीं है। कोई गलत कर रहा है, उसे कहे कौन! इसलिए बाबा कहता है मन्सा पावरफुल बनाओ। मन्सा से टोटल वायुमण्डल चेंज करना, अभी इसकी आवश्यकता है। हर एक डिपार्टमेंट में कोई न कोई बात है ही। उनको वाणी द्वारा ठीक नहीं कर सकते। किसी को कोई बात कहो कि यह गलत है, तो वह बात मानने की उसमें ताकत ही नहीं है। वाचा से कुछ नहीं होगा इसलिए मन्सा से परिवर्तन करो। मतलब मन्सा शक्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करो।

प्रश्नः मन्सा सेवा कैसे करें?

उत्तर: अपने अन्दर लक्ष्य रखें कि मुझे वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाना है। हर एक समझे मैं ज़िम्मेवार हूं। मन्सा सेवा तो सभी कर सकते हैं। लेकिन मन्सा सेवा के लिए भी मन्सा बड़ी शुद्ध चाहिए। मन्सा क्लीन और क्लीयर चाहिए। मन्सा सेवा के लिए किसी विशेष व्यक्ति को सामने नहीं लाना है, बेहद में यह सेवा करनी है। मन में उमंग आये कि मुझे यह करना ही है तो हो जायेगा। और बातों के विस्तार में न जाकर अभी विशेष मन्सा सेवा पर सभी को अटेन्शन देना चाहिए।

मन की बातें

-ब्र.कु सूर्य

प्रश्नः हमें बाप समान बनना है। हमें ब्रह्मा बाबा समान बनना है या शिव बाबा समान? इस नये वर्ष में हम अपने पुरुषार्थ को तीव्र बनाना चाहते हैं, प्लीज़ गाइड करें।

उत्तर: जो बाप समान बनेंगे, वही साक्षात्कार मूर्त्त बनेंगे। कुछ बातों में हमें शिव बाबा को फॉलो करना है व कर्म क्षेत्र पर लौकिक जीवन में ब्रह्मा बाबा को फॉलो करना है। हमें शिवबाबा सम निराकारी बनना है व ब्रह्मा बाबा समान तपस्वी, निरहंकारी व सम्पूर्ण पवित्र बनना है। संसार में ब्रह्मा बाबा किस तरह अचल अडोल, सम्पूर्ण समर्पित व सम्पूर्ण पवित्र बने - इसे जानकर फॉलो करना है। उनकी दृष्टि सबके लिए कैसी थी, उनकी वृत्ति पदार्थों के लिए कैसी थी, वे कितने उपराम थे, उनका चित्त कितना शुभ-भावनाओं व प्रेम से भरपूर था, इसे भी फॉलो करना है।

वे मैं और मेरे के सम्पूर्ण त्यागी थे। सहनशीलता की मिसाल थे, मेरा कुछ भी नहीं, मैं कुछ भी नहीं करता - यह उनकी नैचुरल वृत्ति थी - इसे भी फॉलो करना है।

हमें ब्रह्मा बाबा समान फरिश्ता बनना है। बिना 8 घण्टे योग के कोई भी इस स्थिति को प्राप्त नहीं कर सकता। बहुत अधिक अशरीरी-पन व आत्मिक दृष्टि का अभ्यास करते रहें। चारो सब्जेक्ट में फुल अटेन्शन देना पड़ेगा। जैसे बाबा को भविष्य का नशा था, वैसा ही नशा व 5 स्वरूपों का अभ्यास करें। साथ साथ इस स्वमान में स्थित हो जाएं कि मैं बाप समान हूं और फिर चिन्तन करें - मैं बाप समान हूं तो मुझे कैसा होना चाहिए।

प्रश्नः ब्रह्मा बाबा को भविष्य का बहुत नशा था, क्योंकि उन्हें अपने भविष्य का पता था, परन्तु हमें तो पता नहीं है, फिर हमें वह नशा कैसे रह सकता है?

उत्तर: ब्रह्मा बाबा को तो कई बार भविष्य के नशे में एकान्त में डान्स करते देखा गया था। यह सत्य है कि शिवबाबा ने उन्हें उनके अनेक जन्मों का साक्षात्कार करा दिया था, परन्तु हम भी अपने श्रेष्ठ पुरुषार्थ से अपने भविष्य को जान सकते है। आप अपना भविष्य या अपना नम्बर फिक्स कर दें, उसे कई बार रोज़ याद करें व उसके नशे व खुशी में डान्स करें। यदि आपको उसमें सम्पूर्ण विश्वास होगा तो वही पद आपको मिल जाएगा। यदि यह भी न हो तो कम से कम हम देवता बनेंगे यह तो मालूम है ही, उसके नशे में रहो तो दिव्य संस्कार जीवन में आ जाएंगे।

प्रश्नः ब्रह्मा बाबा का कोई एक श्रेष्ठ पुरुषार्थ हम जानना चाहते हैं ताकि हम भी उसे अपना सकें। और उस पुरुषार्थ को करने की विधि क्या है?

उत्तर: अव्यक्त में एक दिन शिव बाबा ने बताया कि ब्रह्मा बाबा नम्बर वन आत्मा इसलिए बने क्योंकि मैं-पन छोड़ने में नम्बर वन रहे। जबसे शिव बाबा ने उन्हें अपना माध्यम बनाया, उन्होंने स्वयं को पूर्णतः प्रभु हवाले कर दिया था।

एक बड़ी गॉडली गिफ्ट उन्हें शिव बाबा की ओर से यह मिली थी कि जैसे ही शिव बाबा ने उनके तन में प्रवेश किया तो अपनी पवित्र किरणें उनके तन में पॉज़िटीव उनकी कर्मेन्द्रियों को शीतल कर दिया क्योंकि शिवबाबा पवित्रता के सागर है, उन्हें अति पवित्र तन चाहिए था।

हम भी चेक करें - कहां मैं-पन है? मैं घर का बड़ा हूं, मैं बाप हूं, मैं माँ हूं, बच्चों को मेरी बात माननी चाहिए। मैं बुद्धिमान हूं या इन्चार्ज हूं - मेरे पास बहुत डिगरी है, मैं बहुत समय से ज्ञान में हूं या मैंने बहुत सर्विस की है। मैं-पन की 100 बातें हो सकती हैं। अपने में मैं-पन को पहचान कर स्वमान के अभ्यास द्वारा उसे समाप्त करें। यह अच्छी तरह जान लें कि संगम युग पर ईश्वरीय शक्तियों द्वारा ही सब कुछ हो रहा है। मैं-पन आते ही हमारी दिव्यता व शक्तियाँ कम हो जाती है। यदि हमें स्मृति रहती है कि बाबा की शक्तियों से ही सब कुछ हो रहा है तो उनकी शक्तियाँ हमारे साथ काम करती रहती हैं।

प्रश्नः सुना है ब्रह्मा बाबा अन्त में ऐसी स्थिति में रहते थे कि कईयों ने देखा कि वे धरती से ऊपर हैं। क्या हम ऐसी फरिश्ता स्थिति नहीं पा सकते? यदि हाँ तो हमें क्या धारना होगा?

उत्तर: सन् 1968 ब्रह्मा बाबा की गहन तपस्या का वर्ष था। वे अति अन्तर्मुखी रहते थे और निरंतर योग-युक्त थे। इसी कारण से वे सम्पूर्ण फरिश्ता बन गये थे। उनका देह भी अति कोमल व निर्मल बन गया था। कईयों को वे फरिश्ता दिखते थे और बस तभी वे देह छोड़कर अव्यक्त वतनवासी फरिश्ता बन गये और अब बाप समान स्वरूप में रहकर 45 वर्ष से विश्व की महान सेवा कर रहे हैं। वे भगवान के साथी बन गये। उनके पास भी वे ही शक्तियाँ आ गई और अब वे सब को फरिश्ता बनाने में संलग्न हैं।

फरिश्ते ही अब अन्त में विश्व की महान सेवा करेंगे। उनके द्वारा ही सर्व धर्मों की आत्माओं को प्रभु-सन्देश मिलेगा और विनाश काल में सर्व को श्रेष्ठ सकाश मिलेगी। जहां तहां उनके साक्षात्कार होंगे, उनके द्वारा ही सबकी सुरक्षा होगी व सबको सहारे की अनुभूति होगी।

हमें भी यदि उन जैसा फरिश्ता बनना है तो स्वयं को डबल लाइट, उपराम, अनासक्त, स्वमानधारी व कर्मयोगी बनाना होगा। कर्मयोगी बने बिना कोई भी विदेही नहीं बन सकेगा।

डबल लाइट माना आत्मिक ज्योजि स्वरूप में स्थित रहना और मन से बहुत हल्के रहना। उपराम अर्थात कर्म करते हुए व संसार में रहते हुए इसके आकर्षण से परे रहना। निरन्तर स्वमान व ज्ञान के चिन्तन में रहना। साथ साथ फरिश्ता सो देवता बनने का अभ्यास अथवा ये रुहानि ड्रिल बहुत करनी होगी।

प्रश्नः मेरा प्रश्न है कि दादी हृदयमोहिनी के तन में ब्रह्मा बाबा आते हैं या शिवबाबा या दोनों? और ये अव्यक्त पार्ट कब तक चलेगा? क्या हम रोज़ प्रभु मिलन का अनुभव नहीं कर सकते?

उत्तर: दादी जी के तन में बाप-दादा दोनों ही आते हैं। जब तक पुरुषोत्तम संगमयुग है, दोनों का पार्ट साथ ही चलता है, अकेले अकेले वे पार्ट बजाते ही नहीं।

बाबा ने अव्यक्त पार्ट के प्रारम्भ में ही बता दिया था कि जब तुम देखो कि बाबा आते हैं और केवल दृष्टि देते हैं, मुरली नहीं चलाते, तब समझ लेना कि अव्यक्त पार्ट समाप्ति की ओर है।

पार्ट तो समाप्त होना ही है क्योंकि बाबा को अपना कार्य सम्पन्न भी तो करना है। वो चाहते हैं, मैं लम्बे काल से तुम्हारे पास आ रहा हूं, अब तुम मेरे पास आओ। बाबा कुछ ही वर्ष में अपनी सम्पूर्ण शक्तियाँ कुछ आत्माओं को देकर स्वयं वतन में बैठकर स्थापना व विनाश के शेष कार्य को सम्पन करेंगे। और फिर उन श्रेष्ठ अष्ट रत्नों व विजय माला के पहले कुछ रत्नों के द्वारा सृष्टि पर जय जयकार का पार्ट चलेगा।

प्रतिदिन सवेरे सूक्ष्म वतन में जाकर बाप-दादा से दृष्टि लें, उनके साथ रास करें, उनसे तिलक लेकर वरदान लें। उनसे रूह रिहान करें व सच्चे मन से उनका शुक्रिया करें। इससे मिलन का श्रेष्ठ अनुभव होगा। परन्तु ये अनुभव वही कर सकेंगे जो निर्मल, निरहंकारी व बहुत पवित्र होंगे व जो सारा दिन कुछ न कुछ अभ्यास करते हुए व्यर्थ से मुक्त रहेंगे।

contact - Email :-
bksurya8@yahoo.com